Ratna Jyoti®

An ISO Certified Company

GSTIN:-19ADBPN6598G1Z1

OUR EXPERIENCE YOU CAN TRUST

Download Ratna Jyoti Mobile App for ANDROID APP ON Google play

SampleTest

01 Mar 2017 07:18 AM

Durgapur

Model: Web-C1,P3

Order No: 107537301

Phone: +91-341-2668022
Mobile : +91 -9732150484
Whatsapp : +91 -9732150484

RATNA JYOTI®

Website: https://www.ratnajyoti.com/
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan ,W.B , India ,Zip-713322

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**01/03/2017**
दिन	बुधवार
जन्म समय	**07:18:00 घंटे**
इष्ट	03:07:38 घटी
स्थान	**Durgapur**
देश	India

अक्षांश	23:31:13 पूर्व
रेखांश	87:18:42 उत्तर
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:19:15 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	07:37:14 घंटे
वेलान्तर	-00:12:20 घंटे
साम्पातिक काल	18:13:30 घंटे
सूर्योदय	06:02:56 घंटे
सूर्यास्त	17:43:33 घंटे
दिनमान	11:40:37 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	16:34:11 कुम्भ
लग्न के अंश	10:26:11 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मीन - गुरु
राशि-स्वामी	**मीन - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**रेवती - 1**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	शुभ
करण	गर
गण	देव
योनि	गज
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	पूर्व
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दे-देवांशु
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन

RATNA JYOTI

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1938	फाल्गुन	10
पंजाबी	संवत : 2073	फाल्गुन	18
बंगाली	सन् : 1423	फाल्गुन	17
तमिल	संवत : 2073	मासी	17
केरल	कोल्लम : 1192	कुंभम	17
नेपाली	संवत : 2073	फाल्गुन	18
चैत्रादि	संवत : 2073	फाल्गुन	शुक्ल 3
कार्तिकादि	संवत : 2073	फाल्गुन	शुक्ल 3

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 3
तिथि समाप्ति काल _____: 15:17:34
जन्म तिथि _____: 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: रेवती
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 27:16:10 घंटे
जन्म योग _____: रेवती
सूर्योदय कालीन योग _____: शुभ
योग समाप्ति काल _____: 10:19:35 घंटे
जन्म योग _____: शुभ
सूर्योदय कालीन करण _____: गर
करण समाप्ति काल _____: 15:17:34 घंटे
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 06:26:39
भभोग _____: 56:22:05
भोग्य दशा काल _____: बुध 15 वर्ष 0 मा 23 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: सिंह
सूर्य _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृष
राहु _____: तुला

RATNA JYOTI

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

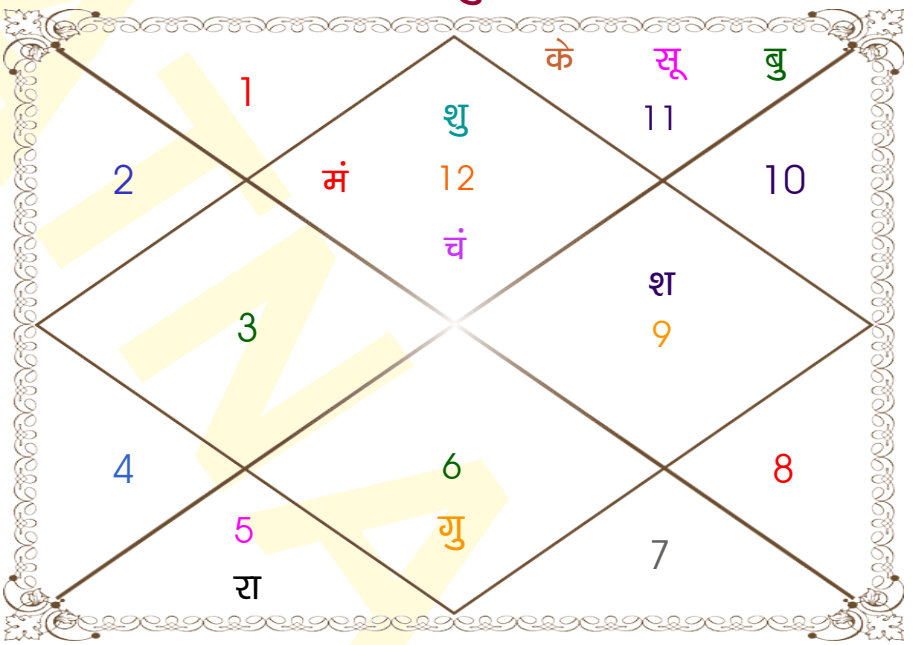

चन्द्र कुंडली

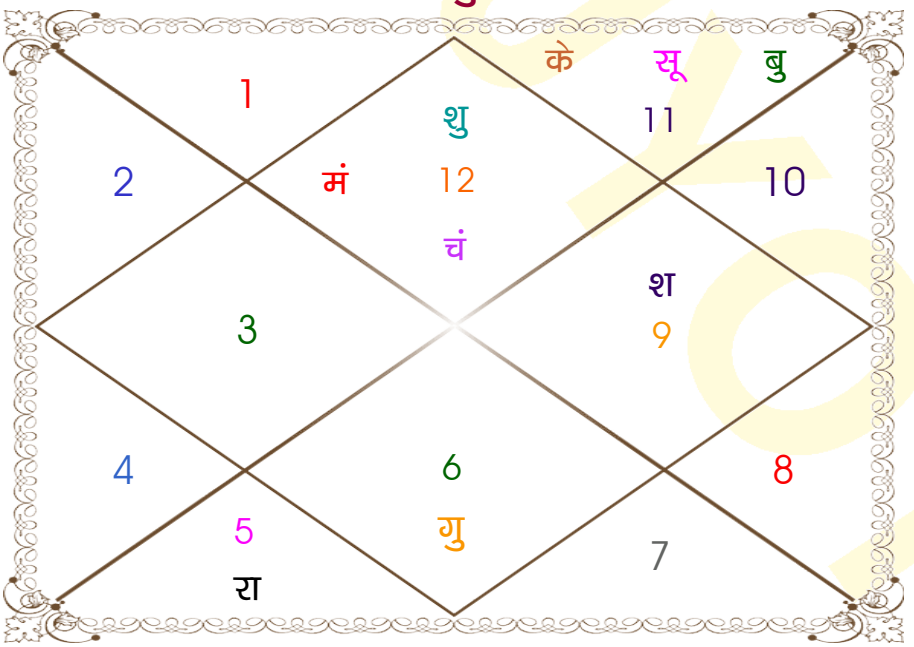

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

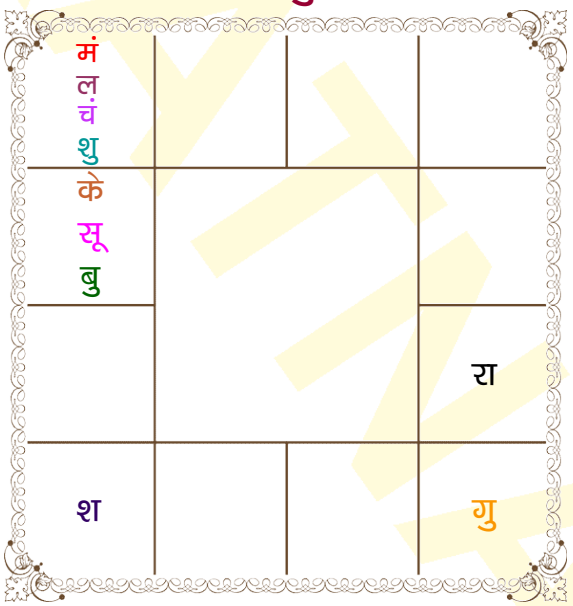

लग्न कुंडली

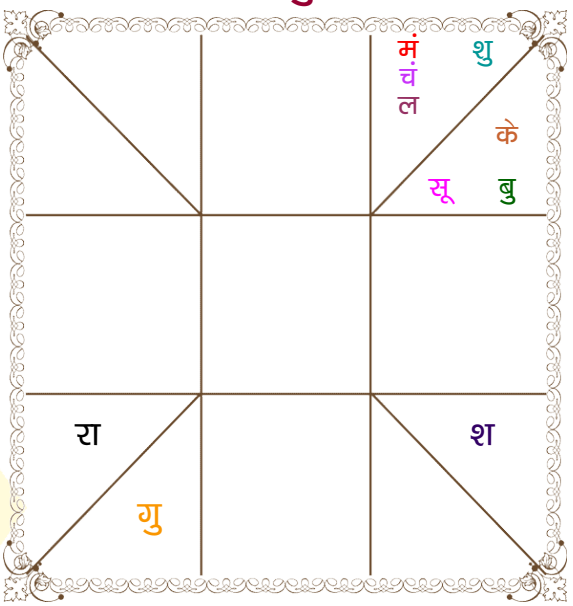

विंशोत्तरी
बुध 15वर्ष 0मा 23दि

बुध

01/03/2017

26/03/2135

बुध	24/03/2032
केतु	25/03/2039
शुक्र	25/03/2059
सूर्य	24/03/2065
चन्द्र	25/03/2075
मंगल	24/03/2082
राहु	25/03/2100
गुरु	25/03/2116
शनि	26/03/2135

योगिनी
उल्का 5वर्ष 3मा 24दि

उल्का

01/03/2017

25/06/2022

उल्का	24/06/2017
सिद्धा	25/08/2018
संकटा	25/12/2019
मंगला	23/02/2020
पिंगला	24/06/2020
धान्या	24/12/2020
भ्रामरी	24/08/2021
भद्रिका	25/06/2022

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	10:26:11	484:04:29	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	सूर्य	---
सूर्य			कुंभ	16:34:11	01:00:15	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	शुक्र	शत्रु राशि
चंद्र			मीन	18:11:07	14:08:48	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	सम राशि
मंगल			मीन	29:24:45	00:43:43	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	मित्र राशि
बुध		अ	कुंभ	11:27:41	01:48:43	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	सम राशि
गुरु	व		कन्या	28:14:15	00:04:10	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	शत्रु राशि
शुक्र			मीन	18:49:59	00:07:52	रेवती	1	27	गुरु	बुध	केतु	उच्च राशि
शनि			धनु	02:38:11	00:03:27	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	सम राशि
राहु	व		सिंह	09:16:58	00:00:59	मघा	3	10	सूर्य	केतु	गुरु	शत्रु राशि
केतु	व		कुंभ	09:16:58	00:00:59	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष			मीन	28:00:09	00:02:46	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	---
नेप			कुंभ	17:34:24	00:02:17	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	सूर्य	---
प्लूटो			धनु	24:41:01	00:01:25	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	---
दशम भाव			धनु	09:00:07	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	गुरु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:05:41

लग्न-चलित

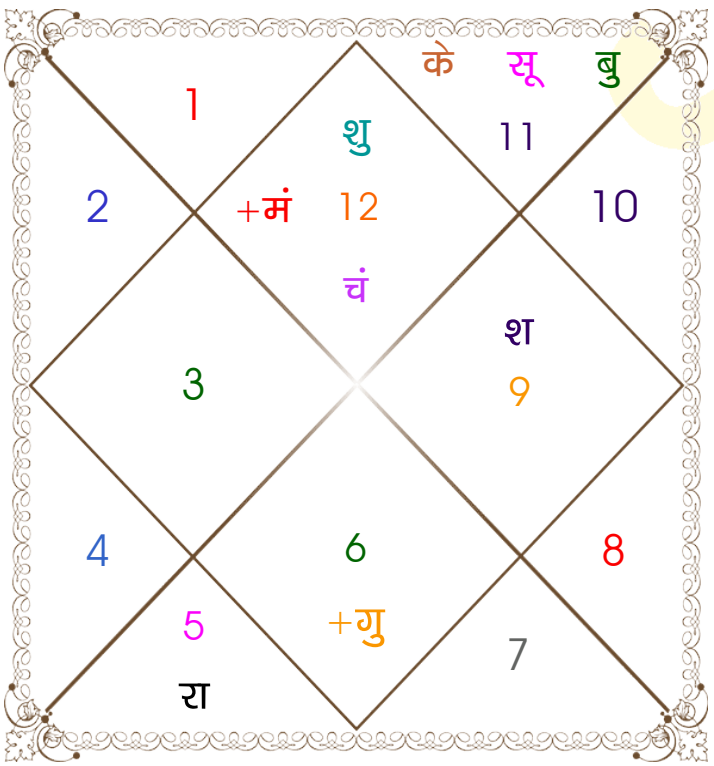

चन्द्र कुंडली

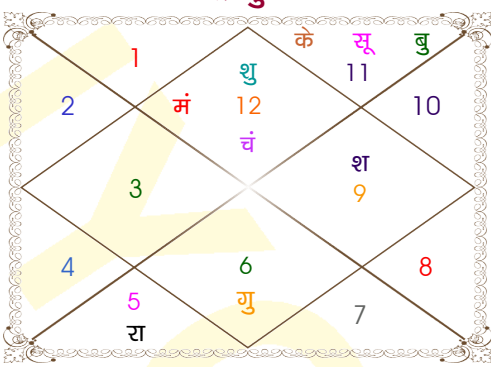

नवमांश कुंडली

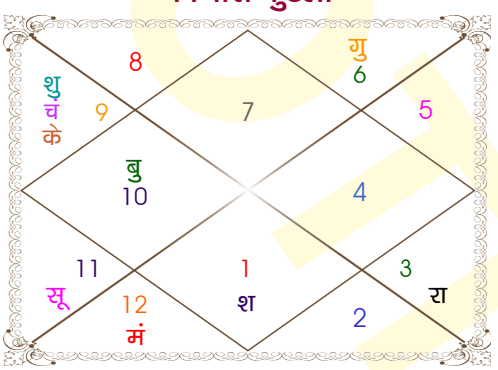

RATNA JYOTI®

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322

Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484

E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कुम्भ	25:11:50	मीन	10:26:11
2	मीन	25:11:50	मेष	09:57:30
3	मेष	24:43:09	वृष	09:28:48
4	वृष	24:14:27	मिथुन	09:00:07
5	मिथुन	24:14:27	कर्क	09:28:48
6	कर्क	24:43:09	सिंह	09:57:30
7	सिंह	25:11:50	कन्या	10:26:11
8	कन्या	25:11:50	तुला	09:57:30
9	तुला	24:43:09	वृश्चिक	09:28:48
10	वृश्चिक	24:14:27	धनु	09:00:07
11	धनु	24:14:27	मकर	09:28:48
12	मकर	24:43:09	कुम्भ	09:57:30

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	10:26:11
2	मेष	16:07:17
3	वृष	14:20:45
4	मिथुन	09:00:07
5	कर्क	04:03:08
6	सिंह	03:26:59
7	कन्या	10:26:11
8	तुला	16:07:17
9	वृश्चिक	14:20:45
10	धनु	09:00:07
11	मकर	04:03:08
12	कुम्भ	03:26:59

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली

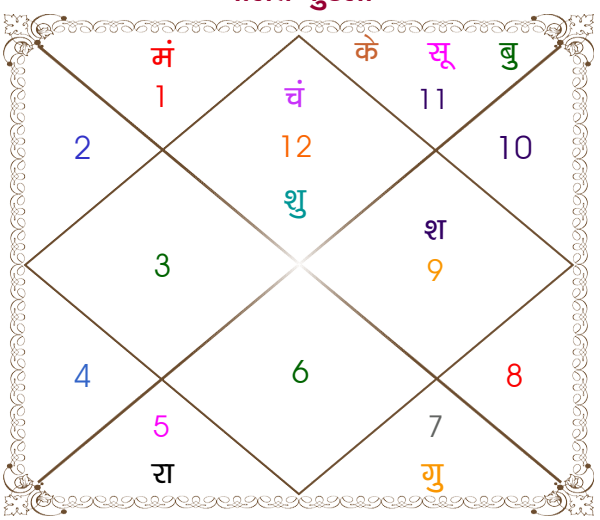

भाव कुंडली

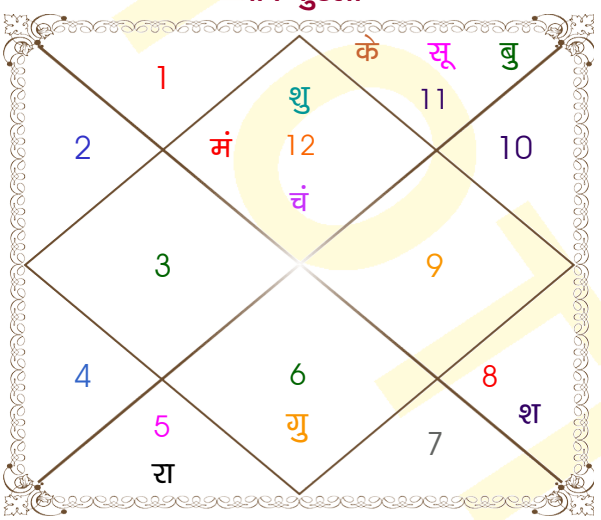

RATNA JYOTI

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	पुत्र	पितृ	युवा	खल	आगमन	7.03	20 %
चंद्र	मातृ	मातृ	कुमार	निपीदित	आगमन	3.38	58 %
मंगल	आत्मा	भ्रातृ	बाल	मुदित	नेत्रपाणि	3.29	60 %
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	कुमार	विकल	आगमन	0.00	37 %
गुरु	अमात्य	धन	बाल	खल	निद्रा	1.51	46 %
शुक्र	भ्रातृ	कलत्र	कुमार	दीप्त	आगमन	22.91	52 %
शनि	कलत्र	आयु	बाल	निपीदित	सभा	4.58	47 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	खल	आगमन	0.00	4 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	खल	आगमन	0.00	4 %
कुल						42.70	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली

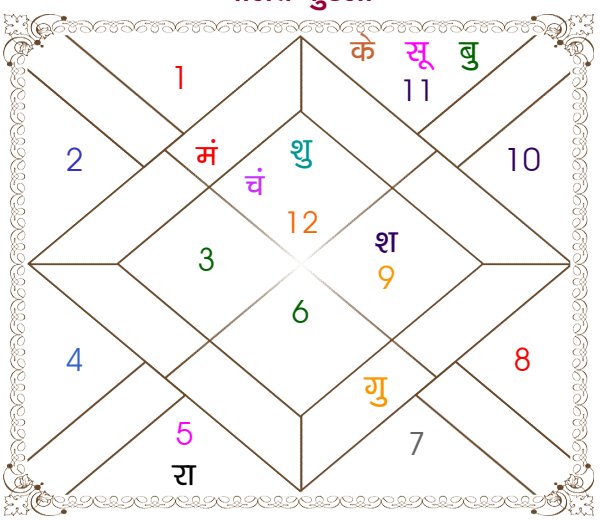

लग्न-चलित

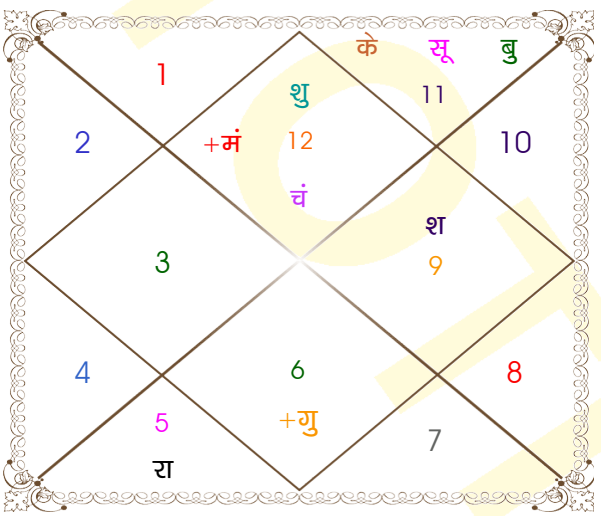

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : बुध 15 वर्ष 0 मास 23 दिन

ग्रह

ग्रह	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य	कुंभ	16:34:11	शनि	राहु	शुक्र	गुरु
चंद्र	मीन	18:11:07	गुरु	बुध	बुध	गुरु
मंगल	मीन	29:24:45	गुरु	बुध	शनि	राहु
बुध	कुंभ	11:27:41	शनि	राहु	शनि	शुक्र
गुरु व	कन्या	28:14:15	बुध	मंगल	शनि	बुध
शुक्र	मीन	18:49:59	गुरु	बुध	केतु	चंद्र
शनि	धनु	02:38:11	गुरु	केतु	शुक्र	बुध
राहु व	सिंह	09:16:58	सूर्य	केतु	गुरु	राहु
केतु व	कुंभ	09:16:58	शनि	राहु	गुरु	बुध
हर्ष	मीन	28:00:09	गुरु	बुध	शनि	शनि
नेप	कुंभ	17:34:24	शनि	राहु	सूर्य	राहु
प्लूटो	धनु	24:41:01	गुरु	शुक्र	बुध	शुक्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मीन	10:26:11	गुरु	शनि	सूर्य	मंगल
2	मेष	16:08:16	मंगल	शुक्र	सूर्य	शुक्र
3	वृष	14:22:30	शुक्र	चंद्र	गुरु	शनि
4	मिथु	09:02:05	बुध	राहु	गुरु	शनि
5	कर्क	04:04:46	चंद्र	शनि	शनि	केतु
6	सिंह	03:27:47	सूर्य	केतु	सूर्य	बुध
7	कन्या	10:26:11	बुध	चंद्र	चंद्र	गुरु
8	तुला	16:08:16	शुक्र	राहु	शुक्र	राहु
9	वृश्चि	14:22:30	मंगल	शनि	राहु	शुक्र
10	धनु	09:02:05	गुरु	केतु	गुरु	मंगल
11	मक	04:04:46	शनि	सूर्य	शनि	शुक्र
12	कुंभ	03:27:47	शनि	मंगल	शुक्र	राहु

के.पी. अयनांश : 23:59:28

फॉरच्युना : मेष 12:03:06

लग्न कुंडली

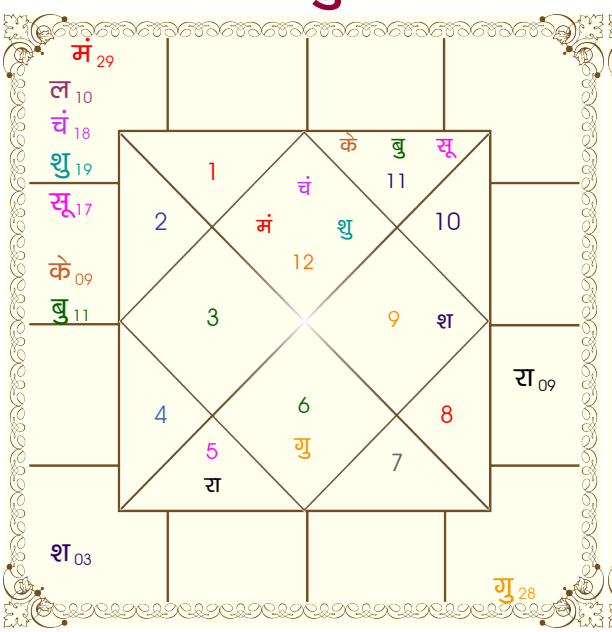

भाव कुंडली

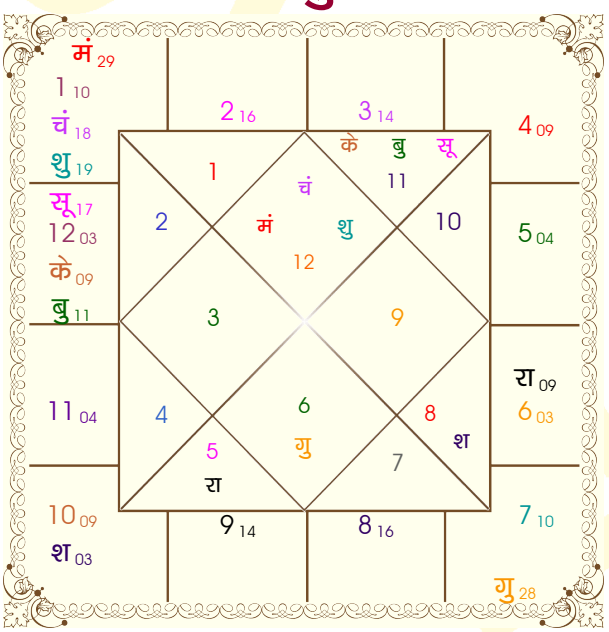

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र, मंगल, गुरु+ शुक्र,
2	मंगल- गुरु-
3	शुक्र-
4	चंद्र- मंगल- बुध- शुक्र-
5	चंद्र-
6	सूर्य+ बुध, राहु, केतु,
7	चंद्र- मंगल- बुध- गुरु, शुक्र-
8	शुक्र-
9	मंगल- गुरु- शनि,
10	गुरु-
11	शनि-
12	सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि+ राहु, केतु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	6+ 12,
चंद्र	1, 4- 5- 7- 12,
मंगल	1, 2- 4- 7- 9- 12,
बुध	4- 6, 7- 12,
गुरु	1+ 2- 7, 9- 10-
शुक्र	1, 3- 4- 7- 8- 12,
शनि	9, 11- 12+
राहु	6, 12,
केतु	6, 12,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	बुध
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	सूर्य
राशि अन्तर स्वामी	बुध

RATNA JYOTI

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मीन	कुंभ	मीन	मीन	कुंभ	कन्या	मीन	धनु	सिंह	कुंभ
होरा	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	कर्क	मिथु	कर्क	वृश्चि	मिथु	वृष	कर्क	धनु	सिंह	कुंभ
चतुर्थांश	मिथु	सिंह	कन्या	धनु	वृष	मिथु	कन्या	धनु	वृश्चि	वृष
सप्तमांश	वृश्चि	वृष	मक	मीन	मेष	कन्या	मक	धनु	तुला	मेष
नवमांश	तुला	कुंभ	धनु	मीन	मक	कन्या	धनु	मेष	मिथु	धनु
दशमांश	कुंभ	कर्क	वृष	सिंह	वृष	कुंभ	वृष	धनु	वृश्चि	वृष
द्वादशांश	कर्क	सिंह	तुला	कुंभ	मिथु	सिंह	तुला	मक	वृश्चि	वृष
षोडशांश	वृष	मेष	कन्या	मीन	कुंभ	मीन	तुला	मक	धनु	धनु
विंशांश	कुंभ	वृश्चि	सिंह	मीन	कर्क	कुंभ	सिंह	कन्या	मिथु	मिथु
चतुर्विंशांश	मीन	कन्या	कन्या	मिथु	वृष	वृष	तुला	तुला	मीन	मीन
सप्तविंशांश	तुला	धनु	वृष	मीन	सिंह	सिंह	वृष	मिथु	धनु	मिथु
त्रिंशांश	कन्या	धनु	मीन	वृश्चि	धनु	वृश्चि	मीन	मेष	कुंभ	कुंभ
खवेदांश	वृश्चि	कुंभ	तुला	मक	कर्क	वृश्चि	वृश्चि	कर्क	मेष	मेष
अक्षवेदांश	मीन	सिंह	मीन	सिंह	मक	मिथु	मेष	मीन	कन्या	कन्या
षष्ट्यंश	वृश्चि	वृश्चि	मीन	मक	धनु	वृष	मेष	वृष	कुंभ	सिंह

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
चन्द्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
मंगल	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
बुध	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
गुरु	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
शुक्र	3 व्यंजन	3 व्यंजन	5 सिंहान	7 कल्पवृक्ष
शनि	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
राहु	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
केतु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	11.20	10.70	13.80	15.60	6.25	8.20	13.50	5.75	9.55
सप्तवर्ग	11.35	11.05	13.30	15.35	6.25	9.68	13.63	6.33	10.63
दशवर्ग	14.33	10.23	14.33	13.00	8.00	10.83	15.38	7.90	9.73
षोडशवर्ग	13.73	10.33	13.05	12.98	7.88	10.28	15.08	8.28	8.70

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	42	45	40	11	32	57	46
सप्तवर्गज बल	86	83	120	116	30	73	98
ओजयुग्मक बल	30	15	0	15	0	15	30
केन्द्र बल	15	60	60	15	60	60	60
द्रेष्काण बल	0	0	0	15	0	0	0
कुल स्थान बल	173	203	220	172	122	205	233
कुल दिग्बल	37	33	23	50	6	33	33
नतोन्नत बल	37	23	23	60	37	37	23
पक्ष बल	49	99	49	49	11	11	49
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	15	0
मास बल	0	0	0	0	0	30	0
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	60	0	0	0	0	0
अयन बल	40	24	42	42	19	37	60
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	127	205	114	257	126	129	132
कुल चेष्टाबल	0	0	43	7	47	50	26
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-8	0	3	-6	-45	0	-5
कुल षट्बल	390	492	420	507	290	461	428
रूप षट्बल	6.5	8.2	7.0	8.5	4.8	7.7	7.1
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.3	1.4	1.4	1.2	0.7	1.4	1.4
संबंधित पद	5	4	2	6	7	3	1

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	31.52	21.79	41.12	9.13	38.75	53.76	34.37
कष्ट फल	25.48	27.18	18.78	50.65	19.31	5.09	22.05

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	290	420	461	507	492	390	507	461	420	290	428	428
भावदिग्बल	30	20	10	30	50	20	0	10	40	30	50	50
भावदृष्टि बल	14	60	68	57	-14	34	14	9	3	20	36	31
कुल भाव बल	334	500	539	594	528	444	521	480	463	340	514	509
रूप भाव बल	5.6	8.3	9.0	9.9	8.8	7.4	8.7	8.0	7.7	5.7	8.6	8.5
संबंधित पद	12	7	2	1	3	10	4	8	9	11	5	6

RATNA JYOTI

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	5	1	3	6	2	2	2	4	6	5	2	39
गुरु	7	3	4	5	3	5	4	7	6	4	3	5	56
मंगल	3	2	5	4	5	2	3	1	5	4	2	3	39
सूर्य	2	4	4	3	5	4	4	3	6	6	4	3	48
शुक्र	6	5	5	7	2	2	5	4	3	6	3	4	52
बुध	6	1	7	5	4	2	7	3	6	7	2	4	54
चंद्र	5	6	3	4	6	5	1	4	7	4	2	2	49
लग्न	2	8	2	4	3	3	3	3	7	6	3	5	49
बिन्दु	32	34	31	35	34	25	29	27	44	43	24	28	386
रेखा	32	30	33	29	30	39	35	37	20	21	40	36	382

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	3	0	1	5	0	1	0	3	4	4	0	21
गुरु	4	0	1	0	0	2	1	2	3	1	0	0	14
मंगल	0	0	3	3	2	0	1	0	2	2	0	2	15
सूर्य	0	0	0	0	3	0	0	0	4	2	0	0	9
शुक्र	4	3	2	3	0	0	2	0	1	4	0	0	19
बुध	2	0	5	2	0	1	5	0	2	6	0	1	24
चंद्र	0	2	2	2	1	1	0	2	2	0	1	0	13
लग्न	0	5	0	1	1	0	1	0	5	3	1	2	19
रेखा	10	13	13	12	12	4	11	4	22	22	6	5	134

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	0	1	5	0	1	0	3	0	4	0	15
गुरु	2	0	0	0	0	2	1	2	3	1	0	0	11
मंगल	0	0	3	3	2	0	1	0	2	2	0	2	15
सूर्य	0	0	0	0	3	0	0	0	4	2	0	0	9
शुक्र	4	2	2	3	0	0	2	0	1	4	0	0	18
बुध	2	0	1	2	0	1	5	0	2	6	0	1	20
चंद्र	0	2	1	2	1	1	0	2	2	0	1	0	12
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	0	5	1	1	2	13
रेखा	8	6	7	12	12	4	11	4	22	16	6	5	113

शोध्य पिंड

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	116	76	96	115	130	79	119	142
ग्रह पिंड	75	20	30	50	40	35	5	55
शोध्य पिंड	191	96	126	165	170	114	124	197

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 15 वर्ष 0 मास 23 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
01/03/2017		24/03/2032		25/03/2039		25/03/2059		24/03/2065	
24/03/2032		25/03/2039		25/03/2059		24/03/2065		25/03/2075	
बुध	20/08/2017	केतु	20/08/2032	शुक्र	24/07/2042	सूर्य	12/07/2059	चंद्र	23/01/2066
केतु	17/08/2018	शुक्र	20/10/2033	सूर्य	24/07/2043	चंद्र	11/01/2060	मंगल	24/08/2066
शुक्र	17/06/2021	सूर्य	25/02/2034	चंद्र	24/03/2045	मंगल	18/05/2060	राहु	22/02/2068
सूर्य	24/04/2022	चंद्र	26/09/2034	मंगल	24/05/2046	राहु	11/04/2061	गुरु	23/06/2069
चंद्र	23/09/2023	मंगल	22/02/2035	राहु	24/05/2049	गुरु	29/01/2062	शनि	23/01/2071
मंगल	19/09/2024	राहु	12/03/2036	गुरु	23/01/2052	शनि	11/01/2063	बुध	23/06/2072
राहु	09/04/2027	गुरु	16/02/2037	शनि	25/03/2055	बुध	17/11/2063	केतु	22/01/2073
गुरु	15/07/2029	शनि	27/03/2038	बुध	23/01/2058	केतु	24/03/2064	शुक्र	23/09/2074
शनि	24/03/2032	बुध	25/03/2039	केतु	25/03/2059	शुक्र	24/03/2065	सूर्य	25/03/2075

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
25/03/2075		24/03/2082		25/03/2100		25/03/2116		26/03/2135	
24/03/2082		25/03/2100		25/03/2116		26/03/2135		00/00/0000	
मंगल	21/08/2075	राहु	05/12/2084	गुरु	13/05/2102	शनि	29/03/2119	बुध	02/03/2137
राहु	07/09/2076	गुरु	30/04/2087	शनि	23/11/2104	बुध	06/12/2121		00/00/0000
गुरु	14/08/2077	शनि	06/03/2090	बुध	01/03/2107	केतु	15/01/2123		00/00/0000
शनि	23/09/2078	बुध	23/09/2092	केतु	05/02/2108	शुक्र	16/03/2126		00/00/0000
बुध	20/09/2079	केतु	11/10/2093	शुक्र	06/10/2110	सूर्य	26/02/2127		00/00/0000
केतु	16/02/2080	शुक्र	11/10/2096	सूर्य	25/07/2111	चंद्र	27/09/2128		00/00/0000
शुक्र	17/04/2081	सूर्य	04/09/2097	चंद्र	23/11/2112	मंगल	05/11/2129		00/00/0000
सूर्य	23/08/2081	चंद्र	06/03/2099	मंगल	30/10/2113	राहु	11/09/2132		00/00/0000
चंद्र	24/03/2082	मंगल	25/03/2100	राहु	25/03/2116	गुरु	26/03/2135		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 15 वर्ष 0 मा 20 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
17/08/2018		17/06/2021		24/04/2022		23/09/2023		19/09/2024	
17/06/2021		24/04/2022		23/09/2023		19/09/2024		09/04/2027	
शुक्र	06/02/2019	सूर्य	03/07/2021	चंद्र	06/06/2022	मंगल	14/10/2023	राहु	06/02/2025
सूर्य	30/03/2019	चंद्र	29/07/2021	मंगल	06/07/2022	राहु	08/12/2023	गुरु	10/06/2025
चंद्र	24/06/2019	मंगल	16/08/2021	राहु	22/09/2022	गुरु	25/01/2024	शनि	05/11/2025
मंगल	23/08/2019	राहु	01/10/2021	गुरु	30/11/2022	शनि	22/03/2024	बुध	17/03/2026
राहु	26/01/2020	गुरु	12/11/2021	शनि	20/02/2023	बुध	13/05/2024	केतु	10/05/2026
गुरु	12/06/2020	शनि	31/12/2021	बुध	04/05/2023	केतु	03/06/2024	शुक्र	12/10/2026
शनि	22/11/2020	बुध	13/02/2022	केतु	03/06/2023	शुक्र	02/08/2024	सूर्य	28/11/2026
बुध	18/04/2021	केतु	03/03/2022	शुक्र	28/08/2023	सूर्य	20/08/2024	चंद्र	14/02/2027
केतु	17/06/2021	शुक्र	24/04/2022	सूर्य	23/09/2023	चंद्र	19/09/2024	मंगल	09/04/2027

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
09/04/2027		15/07/2029		24/03/2032		20/08/2032		20/10/2033	
15/07/2029		24/03/2032		20/08/2032		20/10/2033		25/02/2034	
गुरु	28/07/2027	शनि	17/12/2029	केतु	02/04/2032	शुक्र	30/10/2032	सूर्य	27/10/2033
शनि	06/12/2027	बुध	06/05/2030	शुक्र	26/04/2032	सूर्य	20/11/2032	चंद्र	06/11/2033
बुध	02/04/2028	केतु	02/07/2030	सूर्य	04/05/2032	चंद्र	26/12/2032	मंगल	14/11/2033
केतु	20/05/2028	शुक्र	13/12/2030	चंद्र	16/05/2032	मंगल	20/01/2033	राहु	03/12/2033
शुक्र	05/10/2028	सूर्य	31/01/2031	मंगल	25/05/2032	राहु	25/03/2033	गुरु	20/12/2033
सूर्य	15/11/2028	चंद्र	23/04/2031	राहु	16/06/2032	गुरु	20/05/2033	शनि	09/01/2034
चंद्र	23/01/2029	मंगल	19/06/2031	गुरु	06/07/2032	शनि	27/07/2033	बुध	27/01/2034
मंगल	13/03/2029	राहु	14/11/2031	शनि	30/07/2032	बुध	25/09/2033	केतु	04/02/2034
राहु	15/07/2029	गुरु	24/03/2032	बुध	20/08/2032	केतु	20/10/2033	शुक्र	25/02/2034

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
25/02/2034		26/09/2034		22/02/2035		12/03/2036		16/02/2037	
26/09/2034		22/02/2035		12/03/2036		16/02/2037		27/03/2038	
चंद्र	15/03/2034	मंगल	05/10/2034	राहु	21/04/2035	गुरु	26/04/2036	शनि	21/04/2037
मंगल	27/03/2034	राहु	27/10/2034	गुरु	11/06/2035	शनि	19/06/2036	बुध	17/06/2037
राहु	28/04/2034	गुरु	16/11/2034	शनि	11/08/2035	बुध	06/08/2036	केतु	11/07/2037
गुरु	27/05/2034	शनि	10/12/2034	बुध	04/10/2035	केतु	26/08/2036	शुक्र	16/09/2037
शनि	29/06/2034	बुध	31/12/2034	केतु	26/10/2035	शुक्र	22/10/2036	सूर्य	06/10/2037
बुध	29/07/2034	केतु	08/01/2035	शुक्र	29/12/2035	सूर्य	08/11/2036	चंद्र	09/11/2037
केतु	11/08/2034	शुक्र	02/02/2035	सूर्य	17/01/2036	चंद्र	07/12/2036	मंगल	03/12/2037
शुक्र	15/09/2034	सूर्य	10/02/2035	चंद्र	18/02/2036	मंगल	26/12/2036	राहु	01/02/2038
सूर्य	26/09/2034	चंद्र	22/02/2035	मंगल	12/03/2036	राहु	16/02/2037	गुरु	27/03/2038

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	5
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 5
शत्रु अंक	3, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

RATNA JYOTI

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

जीवन रत्नः	पुखराज		दम्पति, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	मूंगा		स्वास्थ्य, धन, भाग्योदय
कारक रत्नः	मोती		स्वास्थ्य, सन्तति सुख

दशा	रत्न	क्षमता	मंत्र-जप / व्रत / दान / लाभ
बुध	मूंगा	100%	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (9000)
01/03/2017	पुखराज	98%	बुधवार,मूँग, हाथी दाँत, कपूर, फल, घी
24/03/2032	मोती	78%	कम खर्च, सुख, दम्पति
केतु	मूंगा	100%	ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (17000)
24/03/2032	पुखराज	98%	मंगलवार,तिल, सप्तधान्य, नारियल, शस्त्र, तेल
25/03/2039	मोती	78%	कम खर्च, सुख, दम्पति
शुक्र	मूंगा	100%	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (16000)
25/03/2039	पुखराज	98%	शुक्रवार,चावल, मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन, दूध
25/03/2059	मोती	78%	स्वास्थ्य, पराक्रम, दुर्घटना से बचाव
सूर्य	मूंगा	100%	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (7000)
25/03/2059	पुखराज	100%	रविवार,गेहुँ, मूंगा, केसर, रक्तचन्दन, घी
24/03/2065	मोती	97%	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति, दुर्घटना से बचाव
चन्द्र	मोती	100%	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (11000)
24/03/2065	मूंगा	100%	सोमवार,चावल, शंख, कपूर, श्वेतचन्दन, दही
25/03/2075	पुखराज	98%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
मंगल	मूंगा	100%	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (10000)
25/03/2075	पुखराज	100%	मंगलवार,मल्का, केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, घी
24/03/2082	मोती	97%	स्वास्थ्य, धन, भाग्योदय
राहु	पुखराज	98%	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (18000)
24/03/2082	मूंगा	91%	शनिवार,तिल, सरसों, खड़ग, कम्बल, घी
25/03/2100	मोती	78%	शत्रु व रोग मुक्ति, धन, भाग्योदय

नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखत तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4-1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र	निषेध रत्न	दान पदार्थ
माणिक्य	ऊँ घृणि सूर्याय नमः	हीरा, नीलम, गोमेद	गेहूँ,चंदन,घी,लाल वस्त्र
मोती	ऊँ सों सोमाय नमः	गोमेद	चावल,चीनी,घी,श्वेत वस्त्र
मूंगा	ऊँ अं अंगारकाय नमः	हीरा, गोमेद, नीलम	गेहूँ,ताम्र,गुड़,लाल वस्त्र
पन्ना	ऊँ बुं बुधाय नमः	---	मूंग,कांसा,हरित वस्त्र
पुखराज	ऊँ वृं वृहस्पतये नमः	हीरा, गोमेद	चने की दाल,गुड़,पीला वस्त्र
हीरा	ऊँ शुं शुक्राय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	चावल,चांदी,श्वेत वस्त्र
नीलम	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	काला तिल,तेल,काला वस्त्र
गोमेद	ऊँ रां राहवे नमः	माणिक्य, मोती, मूंगा	तिल,तेल,कंबल,नीला वस्त्र
लहसुनिया	ऊँ कें केतवे नमः	---	सप्तधान्य,नारियल,धूम्र वस्त्र

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	03/06/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-03/06/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	कम खर्च
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	सुख
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न-भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

योग कारक एवं मारक

लग्न के लिए	:	योग कारक	-	गुरु, चंद्र, मंगल
		मारक	-	सूर्य, शुक्र, शनि
जन्मकुंडली के लिए	:	योग कारक	-	चंद्र, मंगल, शुक्र
		मारक	-	सूर्य, केतु, राहु

जन्मकुंडली में ग्रह बल

सूर्य	35%	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति
चन्द्र	81%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख
मंगल	78%	स्वास्थ्य, धन, भाग्योदय
बुध	46%	कम खर्च, सुख, दम्पति
गुरु	51%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
शुक्र	74%	स्वास्थ्य, पराक्रम, दुर्घटना से बचाव
शनि	42%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन, कम खर्च
राहु	38%	शत्रु व रोग मुक्ति, कम खर्च
केतु	35%	कम खर्च, व्यावसायिक उन्नति

दशा काल में ग्रह बल

दशा	समाप्ति	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
बुध	24/03/2032	80	46	57	85	44	68	39	37	67
केतु	25/03/2039	55	46	70	73	44	68	27	25	80
शुक्र	25/03/2059	23	78	89	54	44	99	66	50	48
सूर्य	24/03/2065	80	71	70	73	56	43	27	25	55
चन्द्र	25/03/2075	48	103	89	54	44	87	53	25	23
मंगल	24/03/2082	48	103	101	29	56	87	53	25	48
राहु	25/03/2100	23	46	45	41	44	68	68	81	23
गुरु	25/03/2116	48	71	70	29	88	43	52	37	36
शनि	26/03/2135	23	59	57	54	58	80	83	66	23

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके । इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।

RATNA JYOTI

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया मीन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं बलवान होते हैं तथा इनमें तेजस्विता का भाव भी विद्यमान रहता है। इनकी प्रवृति सरल होती है तथा समानता का भाव इनमें बना रहता है फलतः भेद भाव से ये दूर रहते हैं। इनके मुख पर सौम्यता का भाव भी रहता है। ये विद्वान एवं बुद्धिमान होते हैं तथा नवीन विचारों का सृजन करके अन्य जनों को प्रभावित करते हैं। भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने में इनको आनंद की अनुभूति होती है। धनैश्वर्य एवं वैभव से ये युक्त रहते हैं तथा विभिन्न स्रोतों से धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करते हैं।

प्रकृति के प्रति इनका आकर्षण रहता है तथा प्राकृतिक द्रश्यों के अवलोकन से सुख एवं सन्तुष्टि प्राप्त करते हैं। अन्य जनों के प्रति भी इनके मन में प्रेम एवं स्नेह का भाव रहता है परन्तु प्रेम के क्षेत्र में ये भावुकता का प्रदर्शन भी करते हैं। ये व्यवहार कुशल होते हैं तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में ये इच्छित सफलताएं अर्जित करके सांसारिक सुखों का उपभोग करते हैं। साथ ही इनके उन्नति मार्ग भी सर्वत्र प्रशस्त रहते हैं।

इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान व्यक्ति होंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में अपने को स्थापित करेंगे। आपके विचारों से लोग सहमत तथा प्रभावित होंगे जिससे आपके सम्मान एवं यश में वृद्धि होगी। भौतिकता के प्रति आपका आकर्षण होगा तथा सुख पूर्वक भौतिक सुखों का उपभोग करने में सफल होंगे।

लग्न में मंगल की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा मानसिक उद्विग्नता रहेगी। आप में तेजस्विता एवं पराक्रम का भाव भी विद्यमान होगा। अपने इन गुणों से आप सांसारिक कार्य कलापों एवं कार्य क्षेत्र में सफलता तथा उन्नति प्राप्त करेंगे। तंत्र मंत्र आदि में आपकी रूचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करके प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। आपकी प्रवृति यदा कदा अधिक बोलने की भी होगी जिससे अन्य जन आपसे अधिक प्रसन्न नहीं रहेंगे।

आर्थिक दृष्टि से आपकी स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही उत्कृष्ट कार्य कलापों को करने में आपकी इच्छा रहेगी तथा यत्नपूर्वक इनको सम्पन्न करने में तत्पर होंगे। यद्यपि आपके स्वभाव में तेजस्विता का भाव होगा लेकिन यदा कदा कोमलता का भी प्रदर्शन करेंगे। सरकार या उच्चाधिकार वर्ग से आपका सम्बन्ध होगा तथा राजकार्यों में अपना योगदान प्रदान करेंगे। यदा कदा आप कृपणता का भी परिचय देंगे जिससे अन्य लोग आपसे असुविधा की अनुभूति करेंगे परन्तु सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि आप स्वपराक्रम बुद्धिमता एवं योग्यता से अर्जित करने में समर्थ होंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी तथा सामान्य रूप से धार्मिक कार्य कलापों एवं अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। अतः सुख पूर्वक एवं वैभव से युक्त होकर आपका

समय व्यतीत होगा।

RATNA JYOTI

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप एक वैभव तथा ऐश्वर्य शाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका उच्च स्तर बना रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति की भी चल अथवा अचल सम्पत्ति मिलेगी। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। आप अपनी योग्यता एवं बुद्धिमता से भी धन एवं सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त आपको अचल की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा। अतः वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आप चल सम्पत्ति पर निवेश कर सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम आवास की प्राप्ति होगी। आपका घर विशाल, सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। यह भौतिक उपकरणों से भी सुसज्जित रहेगा। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशील, बुद्धिमान एवं शिक्षित महिला होंगी तथा उनका स्वभाव भी सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगी। सभी पारिवारिक जन उनको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी चहुंमुखी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के पूर्ण शुभचिन्तक होंगे तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक प्राप्त करके सफलताएं अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा अच्छे अंको से उतीर्ण करेंगे। इससे आपके उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में उच्चशिक्षा या डिग्री भी अर्जित कर सकते है।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर स्पष्ट रूप से बुद्धिमता की छाप विद्यमान होगी जिससे अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी तीव्र बुद्धि से शीघ्र ही करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा इनका अध्ययन करके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक विज्ञान राजनीति, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र के भी आप ज्ञाता होंगे जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचम भाव में कर्क राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रूचि होगी परन्तु आपका प्रेम उच्चादर्शो से युक्त होगा तथा उसमें मर्यादा, नैतिकता एवं यर्थाथवादी भाव विद्यमान होगा। इसमें भावनात्मक आकर्षण की भी प्रबलता होगी। अतः आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्रों की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, गुणवान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करके सम्मान जनक स्तर प्राप्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना वे अपना परम कर्तव्य समझेंगे। वे माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास की भावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति बच्चों के मन में विशिष्ट लगाव होगा तथा उनके माध्यम से ही वे अपनी समस्याओं का समाधान करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में तन-मन-धन से माता-पिता की सेवा करेंगे तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे इससे आपको बच्चों पर गर्व की अनुभूति होगी।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में वे विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दिक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में शिक्षा प्रदान करेंगे। फलतः बच्चे योग्य बनकर आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अपनी व्यवहार कुशलता एवं कार्य-कलापों से अन्य सामाजिक जनो को प्रभावित करके उनसे स्नेह तथा सम्मान अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपको जीवन में संतति का वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा बृहस्पति भी सप्तम भाव में ही स्थित है। सामान्यतया सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी प्रियवक्ता स्वच्छता प्रिय सौभाग्यशाली एवं विविध कार्यो में दक्ष होता है तथा बृहस्पति के प्रभाव से वह शिक्षित विद्वान प्रसिद्ध सांसारिक कार्यो में दक्ष एवं कर्तव्य परायण होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की विनम्र एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने संभाषण हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगी साथ ही वह स्वच्छता प्रिय होंगी एवं सफाई के प्रति विशेष सजग होंगी सांसारिक कार्य कलापों को करने में वह चतुर होंगी। बृहस्पति के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी होगा एवं समाज तथा परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के सभी अंग प्रत्यंग पुष्ट एवं सडोलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा शरीर भी आकर्षक रहेगा। लेकिन आयु के साथ साथ बृहस्पति के प्रभाव से उनमें किंचित स्थूलता आ सकती है। साहित्य संगीत एवं कला के प्रति भी उनकी रूचि होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में बृहस्पति के प्रभाव से आपका विवाह परिवार में श्रेष्ठ व्यक्ति या संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति सम्मान आकर्षण एवं प्रेम की भावना होगी। सांसारिक महत्व के कार्यो को आप परस्पर सलाह एवं सहमति से पूर्ण करेंगे जिससे आपस में विश्वास एवं समानता का भाव उत्पन्न होगा। इससे दाम्पत्यों संबंधों में मधुरता रहेगी तथा वैवाहिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी शिक्षित एवं प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा समाज में वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान सहयोग एवं स्नेह मिलेगा। साथ ही आप भी उन्हें पूर्ण सम्मान देंगे एवं महत्वपूर्ण कार्यो में उनकी भी सलाह लेंगे जिससे आपस में विश्वसनीयता बनी रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का हार्दिक सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी माता पिता के समान सेवा करेंगी। देवर एवं ननदों को भी वह अपने सद्व्यवहार से प्रसन्न रखेंगी जिससे परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ होगा। यदि अपनी आयु से अधिक आयु के समीपस्थ संबंधी से साझेदारी की जाए तो इससे शुभ फल प्राप्त होंगे एवं परस्पर विश्वसनीयता भी बनी रहेगी ।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में धनुराशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी बृहस्पति है। साथ ही शनि भी दशमभाव में स्थित है। धनुराशि अग्नितत्व एवं शनि वायुतत्व युक्त है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौधिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा उन्नति के मार्ग पर आप अग्रसर रहेंगे। साथ ही श्रमसाध्य के भाव की इससे न्यूनता रहेगी। आप किसी स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय के इच्छुक होंगे तथा इससे आपको वांछित सफलता की प्राप्ति होगी जिससे आपको संतुष्टि की अनुभूति होगी।

धनुराशि में दशमभावस्थ शनि के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र वायूसेना, एयरलाइंस, पैट्रोलियम विभाग, रासायनिक विभाग, लोहे की फैक्टरी या भारी उद्योग खनिज एवं खान विभाग, राजनीति, विद्युत विभाग, प्रशासकीय क्षेत्र, संदेश वाहक, बैंक या वित्त निगम या कम्पनी के कर्मचारी आदि शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित होगी तथा उन्नति में अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने कार्य क्षेत्र का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए लोहे का कार्य फैक्टरी, ऊनी उद्योग, प्रिंटिग प्रेस, एयर ट्रैवल एजैंसी, खेती, बागवानी, राजनीति पैट्रोल पम्प एवं शराब का व्यापार शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इन क्षेत्रों या वस्तुओं का व्यापार करने से आपको वांछित धन एवं लाभार्जन होगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही आपको व्यवधानों का सामना भी नहीं करना पड़ेगा अतः आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का आरम्भ करना चाहिए ।

दशमभाव में शनि के प्रभाव से जीवन में आपको मान प्रतिष्ठा एवं आदर मिलेगा तथा स्वपराक्रम एवं परिश्रम से आप किसी उच्चाधिकार प्राप्त एवं सम्मानित पद अर्जित करेंगे। साथ ही समाज में भी आपका प्रभाव होगा। आपको किसी सामाजिक संस्था या क्लब आदि के के भी सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी होंगे। लेकिन उपरोक्त मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्ति में आपको वांछित विलम्ब एवं व्यवधानों के पश्चात होगी। अतः हतोत्साहित नहीं होना चाहिए तथा परिश्रमपूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न कर करना चाहिए।

आपके पिता पराक्रमी, परिश्रमी एवं तेजस्वी व्यक्ति होंगे तथा समाज में वे प्रभावशाली क्रहोंगे तथा सभी लोग उनको यथोचित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का यथोचित प्रबंध करके आपको योग्य व्यक्ति बनाएंगे। साथ ही आपकी सामाजिक उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा आप भी अपने परिश्रम से इच्छित उन्नति करेंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। लेकिन आपके परस्पर संबंधों में मधुरता कम ही होगी एवं सैद्धांतिक तथा वैचारिक मतभेद बने रहेंगे। इसके अतिरिक्त सांसारिक महत्व के कार्यो में एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग कम ही लेंगे अतः ऐसी स्थितियों की आपको उपेक्षा करनी चाहिए।

फलादेश - 2019

गोचरवश इस वर्ष में बृहस्पति की स्थिति नवम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा अन्य जनों के परोपकार सम्बन्धी कार्य भी सम्पन्न करेंगे। शारीरिक एवं मानसिक रूप से भी आप स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेंगे। इस वर्ष में आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण रुके हुए कार्य बन जाएँगे तथा व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी नवीन लाभदायक योजनाओं का प्रारम्भ होगा। साथ ही नौकरी या राजनैतिक क्षेत्र में भी आपको किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति होगी। समाज में इस समय आप एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में उभर सकेंगे तथा मान प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि में भी वृद्धि होगी। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष शुभ रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा। गोचरफल इस वर्ष अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशा फल शुभ रहेगी अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा अल्पता का आभास होगा परन्तु सामान्यतया परिणाम सुखद ही रहेंगे।

इस वर्ष में गोचरवश स्थिति दशम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं उन्नतिकारक रहेगा। इस समय व्यापारिक क्षेत्र में आप उन्नति या कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन कर सकते हैं। साथ ही राजनीति में संलग्न हों तो उसमें आप किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे या राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से आपका संबन्ध बढ़ेगा। नौकरी या अन्य कार्य क्षेत्र में भी पदोन्नति की संभावनाएं प्रबल होंगी। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। लेकिन शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। इस समय रक्तचाप सम्बन्धी परेशानी उत्पन्न हो सकती हैं। इसके साथ ही आय गोचर फल अशुभ रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा विलम्ब तथा न्यूनता परिलक्षित होगी परन्तु अंतिम परिणाम सन्तोषजनक रहेगा।

गोचरवश इस वर्ष में आपकी कुळँली में राहु की स्थिति चतुर्थ तथा केतु की दशम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा। शारीरिक तथा मानसिक रूप से इस समय आप प्रसन्न तथा स्वस्थ रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक अपने समय को व्यतीत करेंगे। इस वर्ष में जमीन जायदाद सम्बन्धी कोई क्रय विक्रय कर सकते हैं या वाहन आदि के भी क्रय विक्रय की भी संभावना रहेगी। आर्थिक दृष्टि से आपकी स्थिति सामान्य रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में परिश्रमपूर्वक सफल रहेंगे। आपके आय स्रोतों में भी इस समय वृद्धि होगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में भी आप सामान्यतया उन्नतिशील रहेंगे एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। परन्तु माता पिता के लिए यह वर्ष मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक या मानसिक रूप से कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की यात्राएँ समय समय पर हो सकती हैं। लेकिन गोचरफल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथापि दशा शुभ फल प्रदान करेगी । अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता का भी आभास होगा परन्तु अन्ततोगत्वा शुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे।

इस वर्ष बुध की महादशा में शुक्र का अंतर रहेगा। शुक्र प्रथम भाव में मीन राशि में स्थित हैं जबकि बुध द्वादश भाव में कुम्भ राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय सर्वत्र आपके लिए उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे। व्यापार में इच्छित सफलता प्राप्त होगी आर्थिक दृष्टि से स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त होगा। साथ ही आय स्रोतों में वृद्धि होगी। यदि आप नौकरी में है तो कार्य स्तर में उन्नति होगी तथा वरिष्ठ सहयोगियों एवं अधिकारियों से मधुर सम्बंध स्थापित होंगे। पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि के लिए समय उत्तम रहेगा सभी लोग मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण स्नेह तथा सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही घरेलू उपयोग की वस्तुओं पर व्यय कम करेंगे। इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण तथा प्रतिभाशाली व्यक्तियों से सम्बंध स्थापित होंगे। तथा उनसे भी वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। अतः ऐसे समय का आपको यत्नपूर्वक सदूपयोग करना चाहिए तथा सुअवसरों का लाभ उठाना चाहिए।

RATNA JYOTI

फलादेश - 2020

गोचरवश इस वर्ष में बृहस्पति दशम भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए काफी महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग या राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से भी आपके मधुर सम्बन्ध बनेंगे। फलतः इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। इस वर्ष में आपको राज्यस्तर पर किसी सम्मान से सम्मानित भी किया जा सकता हैं। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा सभी लोग प्रेमपूर्वक रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा एवं आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। लेकिन इस समय विश्राम का अभाव रहेगा तथा सांसारिक कार्यों को संपन्न करने में आप तत्पर रहेंगे। इस समय अन्य लोगो से आपको शालीनता का व्यवहार भी करना चाहिए। इसके अतिरिक्त गोचरफल अशुभ परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी अतः यह वर्ष सामान्यतया शुभ रहेगा।

गोचरवश शनि इस वर्ष एकादश भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके शुभ प्रभाव से यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे तथा प्रचुर मात्रा में लाभ भी अर्जित होगा। साथ ही समाज में आपकी कीर्ति तथा प्रतिभा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित आदर प्रदान करेंगे। राजनीति या नौकरी आदि में इस समय आप कोई पद भी प्राप्त कर सकते हैं। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष उत्तम रहेगा एवं सर्वत्र लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे साथ ही प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस वर्ष में आपको स्वयं तथा सन्तति पक्ष के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इसके साथ ही इस वर्ष आय गोचरफल अशुभ रहेंगे परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करने वाली होगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों को यदा कदा आप अल्पता की भी अनुभूति करेंगे तथा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कई बार परिश्रम एवं संघर्ष भी अधिक करना पड़ा परन्तु सामान्यतया यह समय आपके लिए उत्तम एवं सौभाग्यशाली रहेगा।

गोचरवश इस वर्ष में आपकी कुळँली में राहु की स्थिति चतुर्थ तथा केतु की दशम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा। शारीरिक तथा मानसिक रूप से इस समय आप प्रसन्न तथा स्वस्थ रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक अपने समय को व्यतीत करेंगे। इस वर्ष में जमीन जायदाद सम्बन्धी कोई क्रय विक्रय कर सकते हैं या वाहन आदि के भी क्रय विक्रय की भी संभावना रहेगी। आर्थिक दृष्टि से आपकी स्थिति सामान्य रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में परिश्रमपूर्वक सफल रहेंगे। आपके आय स्रोतों में भी इस समय वृद्धि होगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में भी आप सामान्यतया उन्नतिशील रहेंगे एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। परन्तु माता पिता के लिए यह वर्ष मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक या मानसिक रूप से कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की यात्राएँ समय समय पर हो सकती हैं। लेकिन गोचरफल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथापि दशा शुभ फल प्रदान करेगी । अतः उपर्युक्त शुभ फलों

में यदा कदा न्यूनता का भी आभास होगा परन्तु अन्ततोगत्वा शुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे।

इस वर्ष बुध की महादशा में शुक्र का अंतर रहेगा। शुक्र प्रथम भाव में मीन राशि में स्थित हैं जबकि बुध द्वादश भाव में कुम्भ राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपकी महत्वकांक्षाएं पूर्ण होंगी तथा व्यापार के क्षेत्र में भी सन्तोषजनक परिणामों की प्राप्ति होगी। साथ ही व्यापार में लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। यदि नौकरी में है तो अधिकारी वर्ग से सम्बंधो में मधुरता रहेगी तथा वे आपसे संतुष्ट तथा प्रभावित रहेंगे। इस समय पदोन्नति में भी आपको सुअवसरों की प्राप्ति होगी। परिवार में सुख शान्ति की वृद्धि होगी तथा सभी सदस्य आपस में मिलजुल कर रहेंगे। तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही कोई शुभ या मांगलिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। इसके अतिरिक्त प्रभावशाली लोगों से आपके सम्पर्क स्थापित होंगे एवं उनसे वांछित लाभ तथा सहयोग मिलता रहेगा अतः समय का सदुपयोग करें।

RATNA JYOTI

फलादेश - 2021

इस वर्ष में गोचर वश बृहस्पति द्वादश भाव में भ्रमण करेगा अतः इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप उद्विग्नता की अनुभूति कर सकते हैं। आर्थिक दृष्टि से वर्ष अच्छा रहेगा परन्तु व्यय की अधिकता रहेगी। इस वर्ष में आप किसी शुभ या मांगलिक कार्य पर व्यय कर सकते है। कार्य क्षेत्र के लिए वर्ष परिश्रमशील रहेगा परन्तु उन्नति एवं सफलताएं प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय आपकी दूर समीप की कोई यात्रा भी होगी यद्यपि इसमें व्यय अधिक होगा परन्तु भविष्य के लिए लाभ दायक सम्पर्क बनेंगे जिससे लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल अनुकूल रहेंगे जिससे आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम एवं पराक्रम से सफलता मिलती रहेगी तथा व्यय के साथ साथ उचित धनार्जन भी होगा अतः आप किंचित शान्ति की अनुभूति अवश्य करेंगे।

इस वर्ष में शनि गोचरवश एकादश भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आपके व्यापारिक, राजनैतिक या अन्य कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी तथा इसमे कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन होगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा। इस समय आपके आय स्रोतों में सर्वत्र वृद्धि होगी तथा प्रचुरमात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय आपकी समाज में आपकी कीर्ति बढेगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं प्रतिभा के अनुरूप ही आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इस समय आपके समस्त प्रगति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा इनमें उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे परन्तु सन्तति पक्ष एवं स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति आपको सतर्क रहना चाहिए साथ ही आय गोचर तथा दशा फल भी आपके लिए शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं भाग्यशाली सिद्ध होगा।

इस वर्ष में राहु की स्थिति गोचरवश तृतीय भाव में तथा केतु की नवम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस वर्ष में आपके मान प्रतिष्ठा एवं पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी परास्त होंगे तथा आपके समक्ष समर्पण करेंगे। मानसिक रूप से आपकी स्थिति अच्छी रहेगी तथा सभी चिन्ताएँ समाप्त हो जाएँगी। आर्थिक दृष्टि से भी इस समय आपकी उन्नति होगी। तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप सफल होंगे। कार्यक्षेत्र में इस समय स्वपरिश्रम से कोई विशिष्ट उन्नति या सफलता अर्जित करेंगे साथ ही मित्रवर्ग से भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग मिलेगा। परन्तु बन्धुवर्ग से यदा कदा चिन्ता उत्पन्न हो सकती है। साथ ही नवमस्थ केतु के प्रभाव से आपको यदा कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। लेकिन आय गोचरफल तथा दशाफल अनुकूल होने के कारण यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा।

बुध की महादशा में शुक्र का अंतर 17/06/2021 को समाप्त होगा। उसके बाद सूर्य

का अंतर प्रारंभ होगा। शुक्र प्रथम भाव में मीन राशि में स्थित हैं जबकि सूर्य द्वादश भाव में कुम्भ राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी महत्वाकांक्षी योजनाएं सफल होंगी तथा अन्यथा भी उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे। व्यापार में विस्तार होगा तथा लाभ का योग भी बनेगा। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में मधुरता रहेगी। परिवार के सदस्यों से आपको वांछित सहयोग मिलेगा तथा सभी सदस्य आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे जिससे परिवार में सुख शान्ति तथा समृद्धि रहेंगी। इसके अतिरिक्त मित्रवर्ग से भी अवसरानुकूल वांछित सहयोग मिलता रहेगा एवं आपसी विस्वनीयता के भाव में वृद्धि होगी साथ ही दूर समीप की यात्राएं भी सम्पन्न होंगी। जिनसे लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। तथा भविष्य के लिए नए आयाम स्थापित होंगे अतः ऐसे समय का आपको यत्नपूर्वक सदुपयोग करना चाहिए।

यह समय आपके लिए सामान्यतया शुभ फल ही अधिक प्रदान करेगा तथापि यदा कदा अशुभ फलों की प्राप्ति भी हो सकती है इस समय आपकी महत्वपूर्ण योजनाएं तथा कार्य सफल होंगे आर्थिक दृष्टि से समय अनुकूल रहेगा तथा इसमें स्थायित्व बना रहेगा प्रभावशाली व्यक्तियों एवं उच्चाधिकारी वर्ग से आपके सामान्य संबध अच्छे रहेंगे पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि भी बनी रहेगी तथा सभी लोग परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा इस समय आपकी रुचि आध्यात्म या परविद्या की ओर उत्पन्न हो सकती है तथा इस क्षेत्र में कुछ अनुभव तथा उपलब्धियां अर्जित करने में भी आप समर्थ होंगे शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में आप सफल होंगे तथा उनसे कोई परेशानी नहीं होगी लेकिन शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति आपको ऐसे समय में पूर्ण सचेष्ट रहना चाहिए।

फलादेश - 2022

बृहस्पति इस वर्ष में गोचरवश प्रथम भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा सामाजिक क्षेत्र में भी आपको किचिंत मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इस वर्ष व्यापार या अन्य कार्य क्षेत्र में आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस समय अविवाहितों के विवाह की भी संभावना बढ़ेगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा। एवं यत्नपूर्वक आर्थिक कार्यों को सम्पन्न करने में आप तत्पर रहेंगे। इस वर्ष में आपके आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। जिससे आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी। साथ ही विगत रुके हुए कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको सफलता मिलेगी। आप स्वतन्त्र प्रवृति का अनुपालन करेंगे एवं अपने को अत्यन्त ही अनुभवी समझने लगेंगे। अतः यह समय आपके लिए महत्वपूर्ण परन्तु विश्रामरहित रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य गोचरफल अशुभ होने से परन्तु दशा फल अनुकूल रहने से उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा आपको न्यूनता का आभास होगा। परन्तु परिश्रम करने के उपरान्त आप सकरात्मक फल प्राप्त करने में सफल होंगे।

इस वर्ष शनि का भ्रमण द्वादश भाव में रहेगा। अतः इसके प्रभाव से आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अधिक होंगी साथ ही कोई विदेश सम्बन्धी यात्रा भी होने की संभावना रहेगी। इस समय आप अपने स्तर पर योजनाएं तैयार करेंगे तथा उनको पूर्ण करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। परन्तु ऐसे समय में आप शारीरिक दृष्टि से या मानसिक दृष्टि से परेशानी भी होगी तथा कभी कभी अत्यन्त ही उद्विग्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही समाज में अन्य जनों से यदा कदा वाद विवाद भी हो सकता है। इस वर्ष में आप अपने बन्धु, मित्र तथा अन्य शुभ चिन्तकों से कोई विशेष सहयोग या सहायता पाने में असफल रहेंगे तथा अपने ही बल पर अपने कार्यों को पूर्ण करने में तत्पर रहेंगे। इस वर्ष में आय गोचर फल आपको अशुभ फल प्रदान करेंगे लेकिन दशा फल शुभ फल प्रदन करेगी। अतः उपर्युक्त फलों न्यूनाधिक अशुभ फल समय समय पर प्रदर्शित होते रहेंगे। अतः यदा कदा आप मानसिक रूप से कष्ट की अनुभूति करेंगे। अतः अनुकूल एवं शुभ फलो की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए।

इस वर्ष में राहु की स्थिति गोचर वश द्वितीय तथा केतु की अष्टम भाव में रहेगी। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता भी उत्पन्न होगी। साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी सामान्य ही रहेगी परन्तु पारिवारिक जनों के परस्पर संबंधों में यदा कदा मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम से सम्पन्न होंगे तथा न्यूनाधिक सफलता भी आपको प्राप्त होगी। साथ ही आर्थिक स्थिति भी मध्यम रहेगी तथा आवश्यक धनार्जन होता रहेगा परन्तु व्यय भी अधिक होगा लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प रहेगा। इसके अतिरिक्त इस वर्ष में आप जायदाद संबंधी लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं ।

इस समय आपके लिए अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः कार्य क्षेत्र की उन्नति में समस्याएं आएंगी परन्तु आप अपने पराक्रम एवं परिश्रम से उनका समाधान करने में समर्थ हो सकेंगे। साथ ही अधिक मात्रा में शुभ फल की प्राप्ति के लिए आपको

नियमित रूप से राहु एवं केतु का पूजन जप तथा दानादि कार्य करने चाहिए।

बुध की महादशा में सूर्य का अंतर 24/04/2022 को समाप्त होगा। उसके बाद चन्द्र का अंतर प्रारंभ होगा। सूर्य द्वादश भाव में कुम्भ राशि में स्थित हैं जबकि चन्द्र प्रथम भाव में मीन राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष शुभ एवं अनुकूल नहीं रहेगा इस समय आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक विलम्ब एवं समस्याओं का सामना करना पड़ेगा साथ ही आर्थिक स्थिति में भी विषमता रहेगी तथा लाभ मार्ग भी अवरूद्ध होंगे एवं न्यूनाधिक हानि की भी संभावनाएं बनेगी अतः ऐसे समय में आपको किसी भी क्षेत्र में जोखिम नहीं लेना चाहिए तथा यत्नपूर्वक इसकी उपेक्षा करनी चाहिए परस्पर वातावरण में भी इस समय अशांति तथा कलह का भाव रहेगा तथा किसी सदस्य को स्वास्थ्य संबधी परेशानी हो सकती है आपको अपने क्रोध पर ऐसे समय पर नियंत्रण रखना चाहिए अन्यथा अन्य लोगों से संबधो में तनाव उत्पन्न हो सकता है ज्योतिष या परविद्या के प्रति भी आपकी रुचि उत्पन्न होगी तथा किंचित उपलब्धियां इसमें प्राप्त करेंगे इसके अतिरिक्त शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को पराजित तथा प्रभावित करने में भी समर्थ रहेंगे।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आप में काल्पनिक शक्ति की न्यूनता रहेगी फलतः किसी भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य में उल्लेखनीय उपलब्धि अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी साथ ही आपके विगत रुके हुए कार्य पूर्ण रूप से कम ही सफल होंगे आर्थिक स्थिति इस समय विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथा लाभ मार्ग भी अवरूद्ध रहेंगे। साहित्य या कला में आपका उपेक्षा भाव रहेगा तथा इस क्षेत्र में कोई विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त नहीं होगी समाज में मान सम्मान तथा प्रसिद्धि में भी न्यूनता रहेगी पारिवारिक वातावरण इस समय अशांत रहेगा तथा परस्पर तनाव एवं मतभेद रहेंगे मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी सहयोग की अपेक्षा उपेक्षा ही मिलेगी। इसके अतिरिक्त शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी समय समय पर परेशानियां उत्पन्न करेंगे अतः ऐसे समय में आपको धैर्य तथा संयम से कार्य लेना चाहिए।

फलादेश - 2023

बृहस्पति इस वर्ष आपकी कुँडली में द्वितीय भाव में प्रवेश करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन का लाभ प्राप्त करने आप समर्थ रहेंगे। पारिवारिक सुख, शान्ति एवं समृद्धि के लिए भी यह वर्ष उत्तम रहेगा। तथा लोग परस्पर प्रेमपूर्वक रहेंगे। इस वर्ष में आपको पुत्र संतति की भी प्राप्ति हो सकती है। लेकिन कभी कभी व्यय की भी अधिकता होगी जिससे आप का मन खिन्न रहेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष शुभ रहेगा तब समाज में एक प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में आदरणीय समझे जाएंगे। धार्मिक कर्मो में भी आपको रुचि उत्पन्न होगी व वाणी में मधुरता तथा ओजस्विता का भाव आएगा एवं अन्य लोग आपकी वातो से प्रभावित होंगे। इस वर्ष में जायदाद या व्यापारिक क्षेत्र में भी आप इच्छित लाभ अर्जित करेंगे। परन्तु इस वर्ष में आय गोचरफल अधिक शुभ नहीं रहेगा तथा अशुभ फलों की समय समय पर प्राप्ति होगी परन्तु दशाफल अनुकूल फल प्रदान करेगी तथापि यदा कदा उपर्युक्त शुभ फलों में आपको न्यूनता का आभास अवश्य होगा। परन्तु शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक होगी यद्यपि इसके लिए आपको अतिरिक्त परिश्रम तथा संघर्ष करना पड़ेगा।

इस वर्ष शनि का भ्रमण द्वादश भाव में रहेगा। अतः इसके प्रभाव से आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अधिक होंगी साथ ही कोई विदेश सम्बन्धी यात्रा भी होने की संभावना रहेगी। इस समय आप अपने स्तर पर योजनाएं तैयार करेंगे तथा उनको पूर्ण करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। परन्तु ऐसे समय में आप शारीरिक दृष्टि से या मानसिक दृष्टि से परेशानी भी होगी तथा कभी कभी अत्यन्त ही उद्विग्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही समाज में अन्य जनों से यदा कदा वाद विवाद भी हो सकता है। इस वर्ष में आप अपने बन्धु, मित्र तथा अन्य शुभ चिन्तकों से कोई विशेष सहयोग या सहायता पाने में असफल रहेंगे तथा अपने ही बल पर अपने कार्यों को पूर्ण करने में तत्पर रहेंगे। इस वर्ष में आय गोचर फल आपको अशुभ फल प्रदान करेंगे लेकिन दशा फल शुभ फल प्रदन करेगी। अतः उपर्युक्त फलों न्यूनाधिक अशुभ फल समय समय पर प्रदर्शित होते रहेंगे। अतः यदा कदा आप मानसिक रूप से कष्ट की अनुभूति करेंगे। अतः अनुकूल एवं शुभ फलो की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए।

इस वर्ष में राहु की स्थिति गोचर वश द्वितीय तथा केतु की अष्टम भाव में रहेगी। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता भी उत्पन्न होगी। साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी सामान्य ही रहेगी परन्तु पारिवारिक जनों के परस्पर संबंधों में यदा कदा मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम से सम्पन्न होंगे तथा न्यूनाधिक सफलता भी आपको प्राप्त होगी। साथ ही आर्थिक स्थिति भी मध्यम रहेगी तथा आवश्यक धनार्जन होता रहेगा परन्तु व्यय भी अधिक होगा लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प रहेगा। इसके अतिरिक्त इस वर्ष में आप जायदाद संबंधी लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं ।

इस समय आपके लिए अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः कार्य क्षेत्र की उन्नति में समस्याएं आएंगी परन्तु आप अपने पराक्रम एवं परिश्रम से उनका समाधान

करने में समर्थ हो सकेंगे। साथ ही अधिक मात्रा में शुभ फल की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से राहु एवं केतु का पूजन जप तथा दानादि कार्य करने चाहिए।

बुध की महादशा में चन्द्र का अंतर 23/09/2023 को समाप्त होगा। उसके बाद मंगल का अंतर प्रारंभ होगा। दोनों अंतर्दशाओं के स्वामी ग्रह एक ही भाव एवं राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आप अपने आय स्त्रोतौं की वृद्धि करने में असमर्थता की अनुभूति करेंगे साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग एवं प्रभावशाली व्यक्तियों से संबधो में विशेष मधुरता नहीं रहेगी अतिरिक्त कार्यभार लेने की आप में क्षमता नहीं होगी अतः वर्तमान कार्य भार से ही आपको सन्तुष्ट रहना चाहिए इस समय आपके महत्वपूर्ण कार्य तथा योजनाएं पूर्ण नहीं होगी तथा मित्र एवं शुभ चिन्तक भी यथोचित सहयोग प्रदान नहीं करेंगे आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं रहेगी तथा सामाजिक प्रतिष्ठा में भी कोई न्यूनता आ सकती है यद्यपि चन्द्र की अंतर्दशा में यात्राएं भी सम्पन्न होगी परन्तु लाभ अल्प मात्रा में ही मिलेगा इसके अतिरिक्त शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी परेशानी उत्पन्न करेंगे अतः संयम एवं बुद्धिमत्ता से कार्यों को पूर्ण करना चाहिए।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न नहीं होंगे साथ ही आत्मविश्वास एवं साहस के भाव की भी न्यूनता रहेगी। इस समय विगत रुके हुए कार्यों में सफलता अल्प ही प्राप्त होगी। आर्थिक दृष्टि से स्थिति अच्छी नहीं रहेगी तथा लाभ मार्ग अवरुद्ध रहेंगे जिससे यदा कदा आर्थिक परेशानी हो सकती है। व्यापारिक क्षेत्र में भी उन्नति सामान्य रहेगी तथा नौकरी में पदोन्नति संबधी विलम्ब होगा। सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी न्यूनता आएगी तथा शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे पारिवारिक शांति भी मध्यम रहेगी तथा किसी सदस्य का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। लेकिन कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा अतः संयम एवं बुद्धिमत्ता पूर्वक कार्य कलापों को सम्पन्न करें तथा जोखिम के कार्यों से दूर रहें।